तीन गर्म कम्बल



बूढ़ी महिला एक ऊंची पहाड़ी पर रहती है. उसके घर की खिड़कियों, दरवाजों, दीवारों और फर्श में दरारे ही दरारे हैं. सर्दियों में ठंडी हवा बहती है और वो उसके टूटे-फूटे पुराने घर को कंपकंपी और ठंड से भर देती है. कोई आश्चर्य नहीं, कि जब बूढ़ी औरत की बेटी रिल्डा उससे मिलने आती है और उसे गर्म रखने के लिए एक बढ़िया कम्बल लाती है. बूढ़ी औरत वो कम्बल अपने वफादार बूढ़े गधे को दे देती है. निराश होकर, रिल्डा अपने भाई हंस से, माँ को दूसरा कम्बल देने का आग्रह करती है, लेकिन सहृदय वृद्ध महिला इस नए कम्बल को अपनी छोटी बकरी को दे देती है. फिर हंस और रिल्डा अपने बड़े भाई जेकब से मां के लिए एक तीसरा कंबल मांगते हैं. पर बूढ़ी महिला उसे अपने वफादार बूढ़े कुत्ते को दे देती है. फिर भी, सर्दियों में ठंडी हवा में बूढ़ी औरत खुद को गर्म और खुश रखती है.

तीन गर्म कम्बल



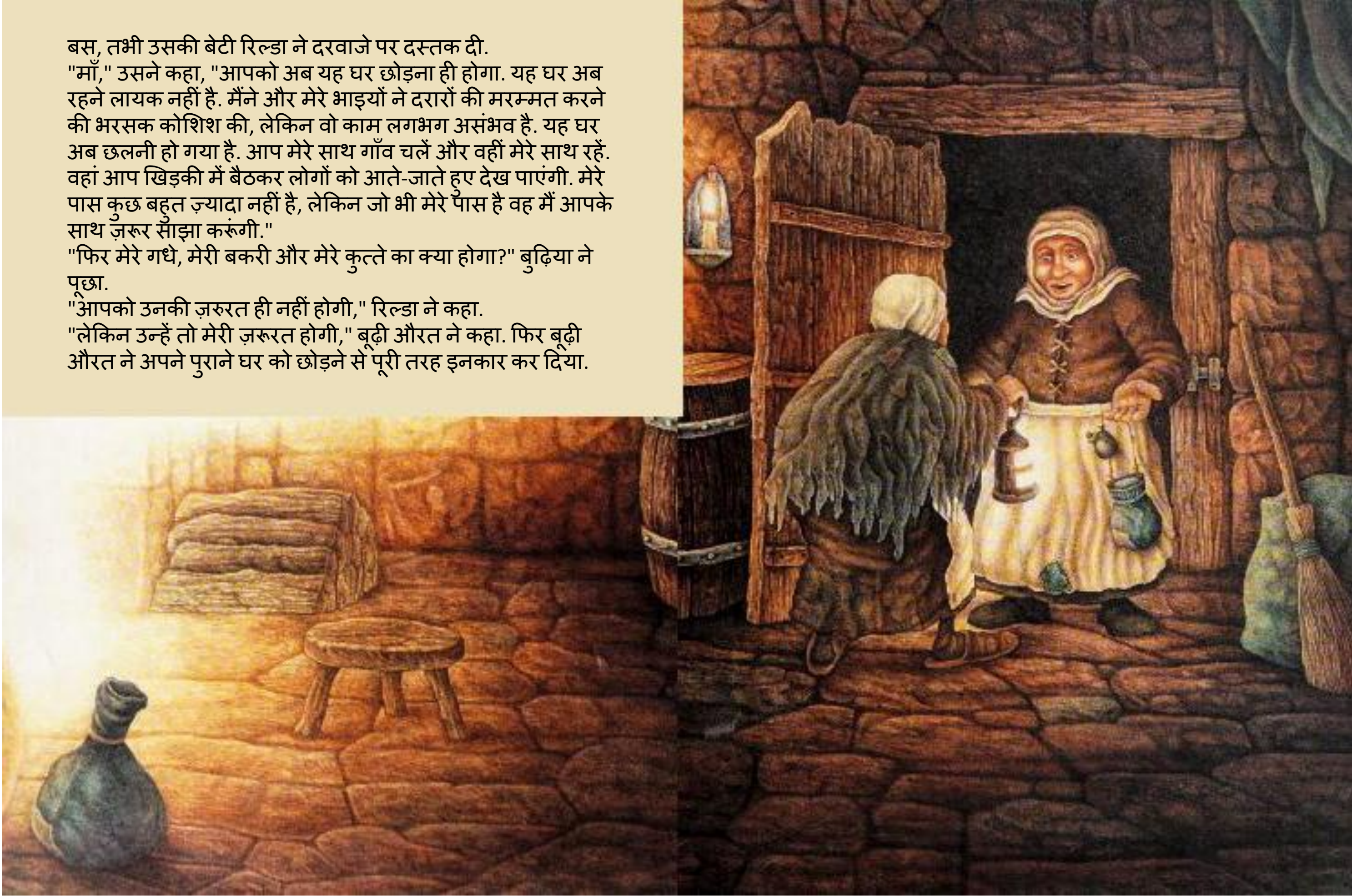


एक बूढ़ी औरत थी जो एक पहाड़ी पर एक पुराने, टूटे मकान में रहती थी. घर की खिड़कियों में दरारें और दरवाजों के नीचे दरारे थीं. दीवारों में दरारें और फर्श पर भी दरारें थीं.

जब सर्दियाँ आईं, तो हवा घाटी से होकर पहाड़ी पर चढ़कर आई और दरारों में से बुढ़िया के घर में घुस गई. घर, ठंड से भर गया. बूढ़ी औरत आग के अलाव के करीब जाकर बैठ गई. उसने खुद को अपने एकलौते कम्बल से ढँक लिया. वो कम्बल फटा-पुराना, और छेदों से भरा हुआ था.

जब बुढ़िया ने आग की तरफ देखा तो उसे अपने वफादार गधे गैरीबाल्डी की याद आई. गैरीबाल्डी के कान उस बर्फीली हवा में एकदम जम गए होंगे. यह सोच कर ही बुढ़िया कांपने लगी. बूढ़ी औरत ने अपनी दूध देने वाली बकरी विन्नना के बारे में भी सोचा. ठंड से ज़रूर उसकी नाक बह रही होगी. यह सोचकर ही बुढ़िया की खुद की नाक सुन्न हो गई और वो कांपने लगी. फिर बुढ़िया ने अपने बूढ़े और थके कुत्ते को देखा जो दरवाज़े पर रखवाली कर रहा था. कुत्ते के पैर सर्द हवा के झोंकों से जम गए होंगे. कुत्ते के बारे में सोचकर ही बुढ़िया नीली हो गई और उसके दाँत किटकिटाने लगी.

बस, तभी उसकी बेटी रिल्डा ने दरवाजे पर दस्तक दी.
"माँ," उसने कहा, "आपको अब यह घर छोड़ना ही होगा. यह घर अब रहने लायक नहीं है. मैंने और मेरे भाइयों ने दरारों की मरम्मत करने की भरसक कोशिश की, लेकिन वो काम लगभग असंभव है. यह घर अब छलनी हो गया है. आप मेरे साथ गाँव चलें और वहीं मेरे साथ रहें. वहां आप खिड़की में बैठकर लोगों को आते-जाते हुए देख पाएंगी. मेरे पास कुछ बहुत ज़्यादा नहीं है, लेकिन जो भी मेरे पास है वह मैं आपके साथ ज़रूर साझा करूंगी."
"फिर मेरे गधे, मेरी बकरी और मेरे कुत्ते का क्या होगा?" बुढ़िया ने पूछा.
"आपको उनकी ज़रूरत ही नहीं होगी," रिल्डा ने कहा.
"लेकिन उन्हें तो मेरी ज़रूरत होगी," बूढ़ी औरत ने कहा. फिर बूढ़ी औरत ने अपने पुराने घर को छोड़ने से पूरी तरह इनकार कर दिया.





अगले दिन, बूढ़ी औरत ने आग जलाने के लिए लकड़ियां इकट्ठा कीं. उसके गधे गैरीबाल्डी ने उन लकड़ियों को घर पहुंचाया. फिर से रिल्डा आई. इस बार वो अपनी माँ के लिए एक अच्छा कम्बल लेकर आई थी, जो नरम और नीले रंग का था.

"माँ," रिल्डा ने कहा, "अगर आपने अपने पुराने घर में रहने का पक्का मन बनाया है, तो यह कम्बल आपको गर्म रखेगा."

"बहुत धन्यवाद बेटी," बूढ़ी औरत ने कहा "तुम एक समर्पित बेटी हो और साथ में दयालु भी हो."

उस रात, सायं-सायं हवा चली और सर्द हवा दरारों में से घर में घुस गई. बूढ़ी औरत नए गर्म कंबल के नीचे आराम से लेटी थी. उसने अपने गधे गैरीबाल्डी के बारे में सोचा. गधे के पास अपने कान गर्म करने के लिए कोई कंबल या आग नहीं थी. फिर बुढ़िया नए कंबल को लेकर गधे के पास गई.

गैरीबाल्डी को इतनी ठंड लग रही थी कि वह सो नहीं पा रही थी. वो लगातार हिल-डुल रही थी और ज़मीन पर अपने पैर पटक रही थी.

"मेरी वफादार मित्र," बूढ़ी औरत ने कहा, "तुम मेरे लिए आग जलाने की लकड़ियां ढोती हो. तुम्हें इतनी भयानक सर्दी नहीं झेलनी चाहिए." और यह कह कर बूढ़ी औरत ने अपने अच्छे, मुलायम नीले कंबल को गधे के चारों ओर लपेटा. उसने ध्यान से गधे के कानों को ढंका.

फिर गैरीबाल्डी हवा पर हंसी, उसने अपनी आँखें बंद कीं और खर्राटे लेने लगी.



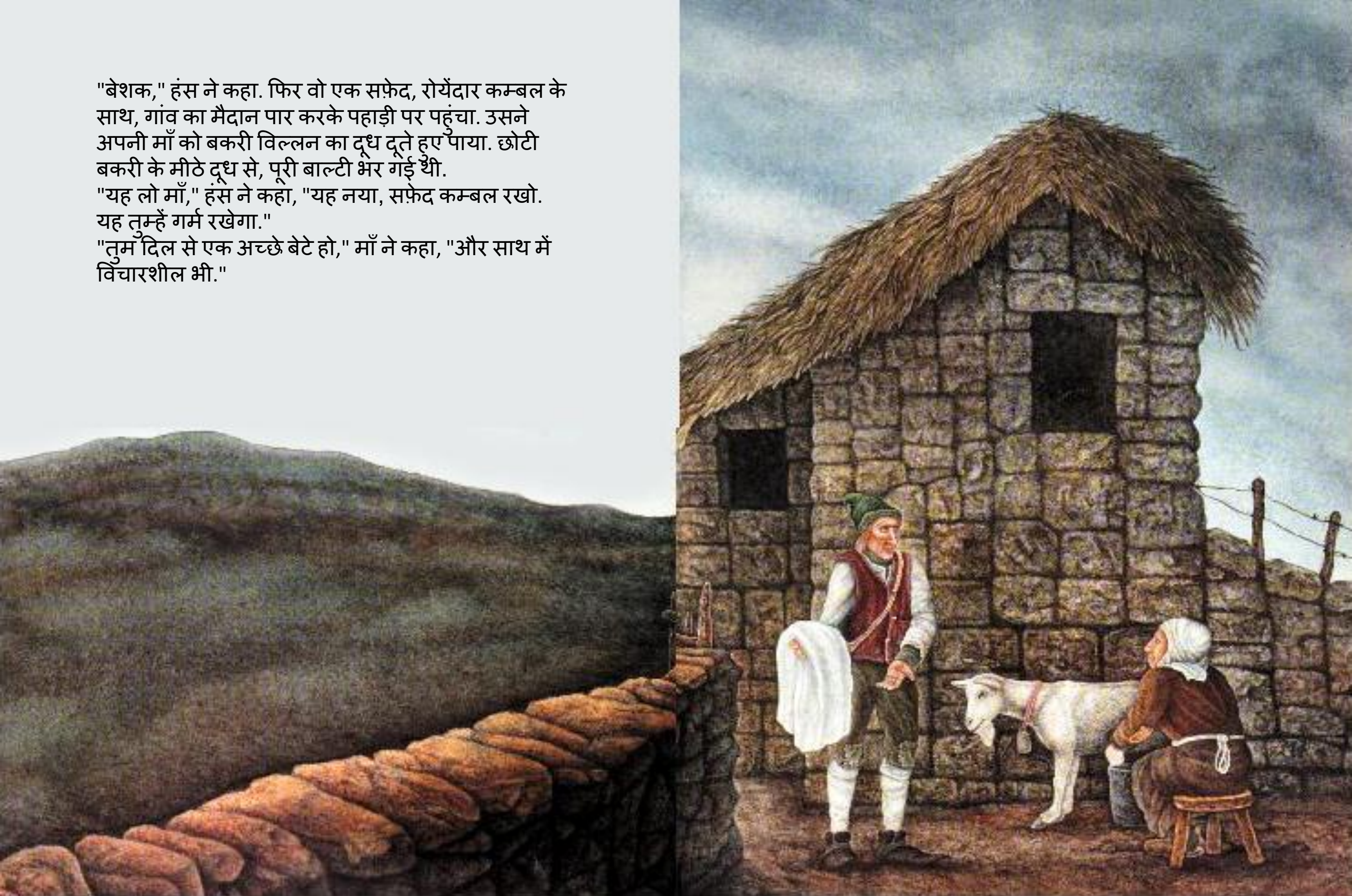


जब रिल्डा दुबारा वापिस आई, तो उसने देखा कि बुढ़िया आग पर रखे एक बर्तन को हिला रही थी. और उसका फटा-पुराना कम्बल उसके कंधों पर पड़ा था.
"माँ," रिल्डा ने कहा, "मैंने जो अच्छा कंबल आपको दिया था वो कहाँ गया?"
"मेरे वफादार गधे को एक नरम कंबल की सख्त ज़रुरत थी," माँ ने कहा.
"आप अपना फटा-पुराना कम्बल गैरीबाल्डी को उढ़ा दें," रिल्डा ने कहा.
"मैं अभी जाकर अच्छे और नए कम्बल को वापस लाती हूँ."
"नहीं!" बुढ़िया ज़ोर से चिल्लाई, "फिर मेरे शरीर से गधे की बदबू आएगी! मैं गधे के कम्बल को इस्तेमाल करने की बात कभी सोच भी नहीं सकती हूँ?"
"तुम्हारी बातें ठीक है, माँ," रिल्डा ने कहा.

फिर रिल्डा गाँव पार करके, पहाड़ी के नीचे उतरी और फिर खेत में से होकर अपने भाई हंस के घर पहुंची. हंस का घर भी छोटा था पर उसकी माँ जैसा टूटा-फूटा नहीं था.
"हंस," रिल्डा ने कहा. "माँ, पहाड़ी पर अपने उस पुराने टूटे-फूटे घर में ठंड से जम रही है. क्या तुम्हारे पास कोई अच्छा कम्बल है जिसका माँ इस्तेमाल कर सके?"



"बेशक," हंस ने कहा. फिर वो एक सफ़ेद, रोयेंदार कम्बल के साथ, गांव का मैदान पार करके पहाड़ी पर पहुंचा. उसने अपनी माँ को बकरी विल्लन का दूध दूते हुए पाया. छोटी बकरी के मीठे दूध से, पूरी बाल्टी भर गई थी.
"यह लो माँ," हंस ने कहा, "यह नया, सफ़ेद कम्बल रखो. यह तुम्हें गर्म रखेगा."
"तुम दिल से एक अच्छे बेटे हो," माँ ने कहा, "और साथ में विचारशील भी."



उस रात, जब सूरज ढल गया और तेज़ सर्द हवा बहने लगी, तो बूढ़ी औरत सफ़ेद, रोयेंदार कम्बल को ओढ़कर अपने बिस्तर में लेटी. लेकिन हर बार जब उसने अपनी आँखें बंद कीं, तो उसे अपनी बकरी विल्लन की याद आई. वो बेचारी ठंड में जकड़ गई होगी और बर्फीली हवा से उसकी नाक नीली हो गई होगी. फिर बूढ़ी औरत ने अपना सफ़ेद, रोयेंदार कम्बल उठाया और वो विल्लन के पास गई. ठंड के मारे विल्लन बिल्कुल आराम नहीं कर पा रही थी. वो सर्द हवा के झोंके के कारण अपने दबड़े में एक छोर से दूसरे छोर तक लगातार दौड़ रही थी.





"मेरी छोटी प्यारी बकरी," बूढ़ी औरत ने कहा. "तुम्हारी वजह से मुझे दूध और पनीर खाने को मिलता है. यह उचित है कि तुम्हें गर्म रहना चाहिए." फिर बूढ़ी औरत ने अपना सफ़ेद, रोयेंदार कम्बल अपनी बकरी विलन्ना के ऊपर डाल दिया. उसने सावधानी से बकरी की नाक को ढंका. फिर विलन्ना अपने दबड़े के एक कोने में दुबक कर सो गई.

बूढ़ी औरत अपने बिस्तर में लेटी और उसने छेदों से भरे अपने पुराने कम्बल के नीचे सोने की कोशिश की.





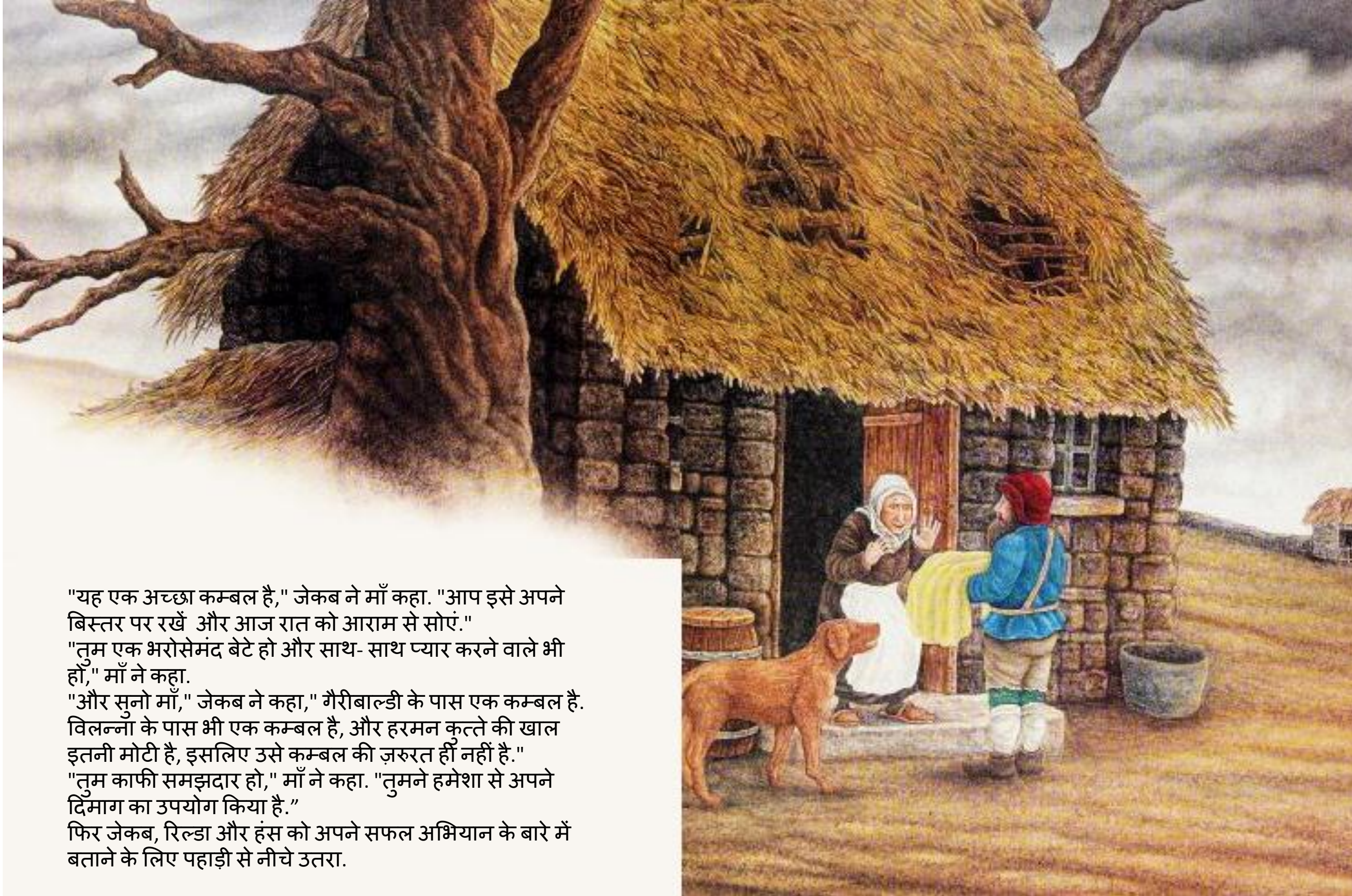
अगला दिन पिछले दिन के मुकाबले अधिक ठंडा था. हंस यह देखने के लिए वापिस आया कि क्या उसकी माँ सफ़ेद, रोयेंदार कम्बल के नीचे आराम से सोई थी.
उसकी बजाए, उसने अपनी माँ को एक फटे-पुराने, छेदों से भरे कम्बल में लिपटा हुआ पाया. माँ, आग में हवा फूंक रही थी.
"अच्छा वो सफ़ेद, रोयेंदार कम्बल कहाँ गया?" हंस ने पूछा.
"मेरी उदार दूध देने वाली बकरी को उस गर्म कंबल की मुझसे अधिक ज़रुरत थी," माँ ने कहा.
"माँ," हंस ने कहा, "मैं वो नया अच्छा कम्बल आपके लिए लेकर आऊंगा. विल्लन, आपका पुराना कम्बल ओढ़ सकती है."
"क्या!" बुढ़िया चिल्लाई. "जो अच्छा कंबल बकरी ने ओढ़ा है उसमें कंटीले बीज चिपके होंगे. कंटीले बीज मुझे खरोंचेंगे और मेरी त्वचा में चुभेंगे.
मैं बकरी के शरीर से उतरे कम्बल का उपयोग बिल्कुल नहीं करूंगी."
"आपकी यह बात तो ठीक है, माँ," हंस ने कहा.



उसके बाद हंस सीधे पहाड़ी से उतरा, और फिर आटे की चक्की से होता हुआ अपने बड़े भाई जेकब के घर पहुंचा.
"जेकब," उसने कहा, "हमारी गरीब बूढ़ी मां के पास खुद को गर्म रखने के लिए सिर्फ छेदों से भरा एक पुराना कम्बल है. माँ ने रिल्डा वाला कम्बल गधे को दे दिया, और मेरा कम्बल अपनी बकरी को दे दिया. अब हमारे पास और कोई कम्बल नहीं बचा है. क्या आपके पास कोई अच्छा कम्बल है जो हम माँ को दे सकें? "
"ज़रूर," जेकब ने कहा. जेकब भी कोई रईस नहीं था लेकिन उसके पास अपनी गरीब बूढ़ी मां से कुछ अधिक था.
"अच्छा," हंस ने कहा. "भाई, बस यह ध्यान रखना कि माँ उसे अपने खुद के लिए इस्तेमाल करें. और हाँ, आप हममें सबसे बड़े हैं, इसलिए वो आपकी बात ज़रूर मानेंगी."



जेकब ने एक अच्छा कम्बल लिया, जो बिल्कुल नया और आरामदायक था. फिर वो गाँव से होते हुए, पहाड़ी पर चढ़कर अपनी माँ के घर पहुंचा.



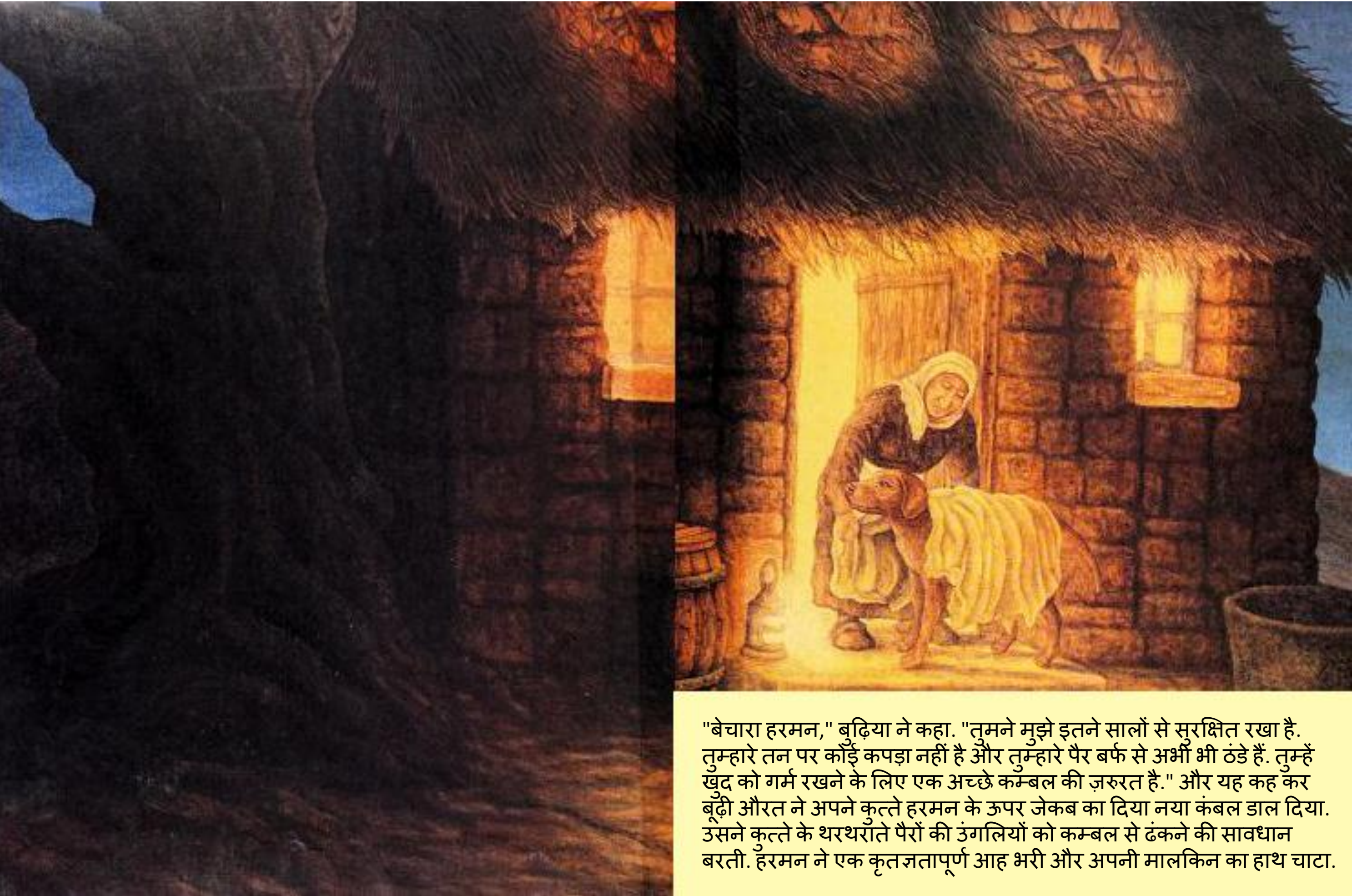
"यह एक अच्छा कम्बल है," जेकब ने माँ कहा. "आप इसे अपने बिस्तर पर रखें और आज रात को आराम से सोएं."
"तुम एक भरोसेमंद बेटे हो और साथ- साथ प्यार करने वाले भी हो," माँ ने कहा.
"और सुनो माँ," जेकब ने कहा," गैरीबाल्डी के पास एक कम्बल है. विलन्ना के पास भी एक कम्बल है, और हरमन कुत्ते की खाल इतनी मोटी है, इसलिए उसे कम्बल की ज़रुरत ही नहीं है."
"तुम काफी समझदार हो," माँ ने कहा. "तुमने हमेशा से अपने दिमाग का उपयोग किया है.”
फिर जेकब, रिल्डा और हंस को अपने सफल अभियान के बारे में बताने के लिए पहाड़ी से नीचे उतरा.



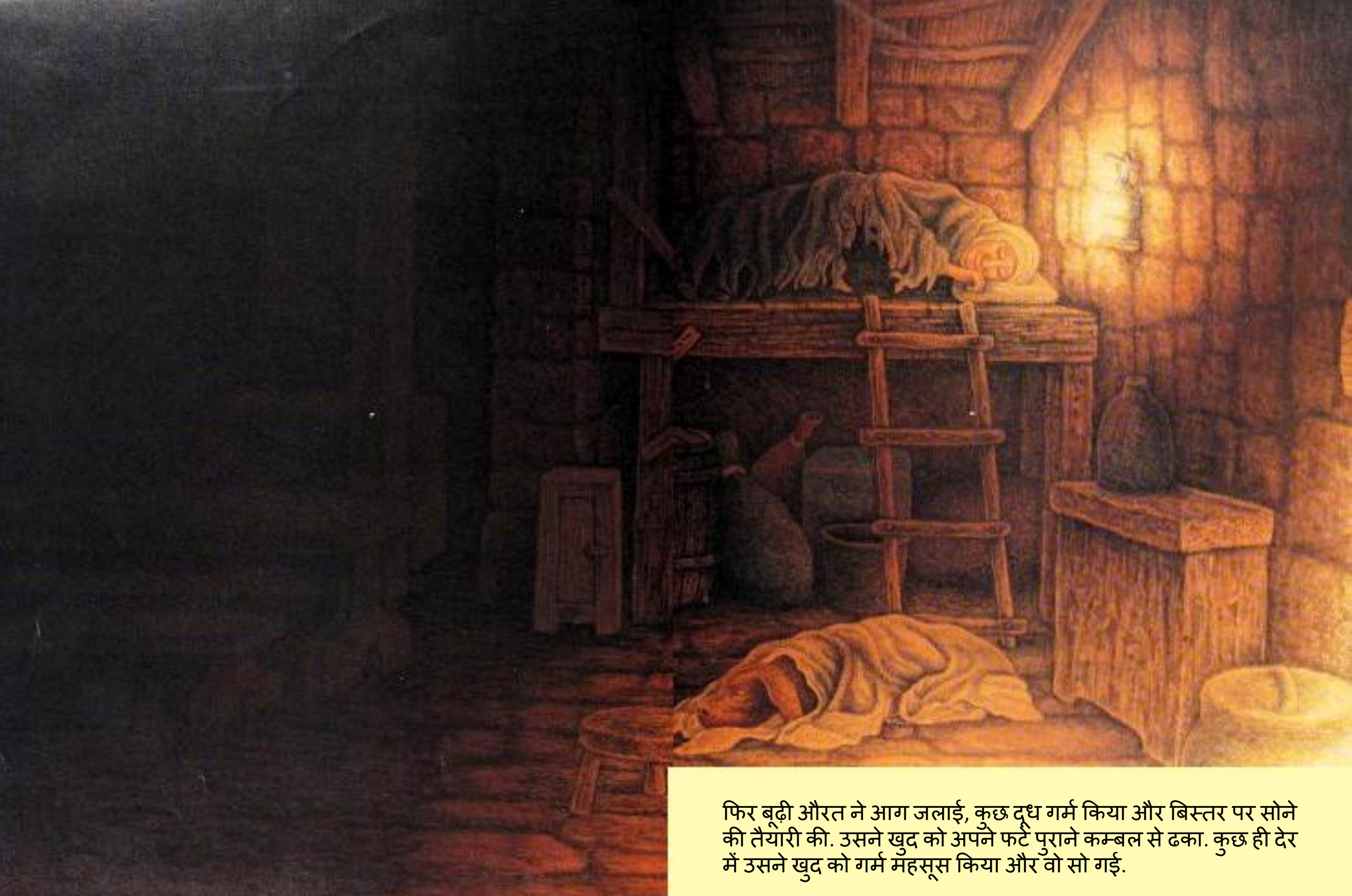
जब रात आई तो हवा घर की दरारों में से अंदर घुसी और हर चीज़ बर्फ के टुकड़े की तरह ठंडी हो गई. अपने शेड में गैरीबाल्डी अपने नए और गर्म कम्बल के अंदर सोई थी. बकरी विलन्ना भी सफ़ेद नए कम्बल की गर्मी में आराम कर रही थी. बूढ़ी औरत के खुद को जेकब के दिए नए कम्बल में लपेटा और फिर आग के सामने बैठ कर अपने पैरों को गर्म करने लगी.

पहाड़ी की तलहटी से भेड़ियों के चिल्लाने की आवाज़ आई. हरमन कुत्ते ने दरवाज़े से छलांग लगाई और वो बर्फीली ज़मीन पर दौड़ा और उसने भेड़ियों का पीछा किया. बुढ़िया दरवाजे के पास उसका इंतजार करती रही.

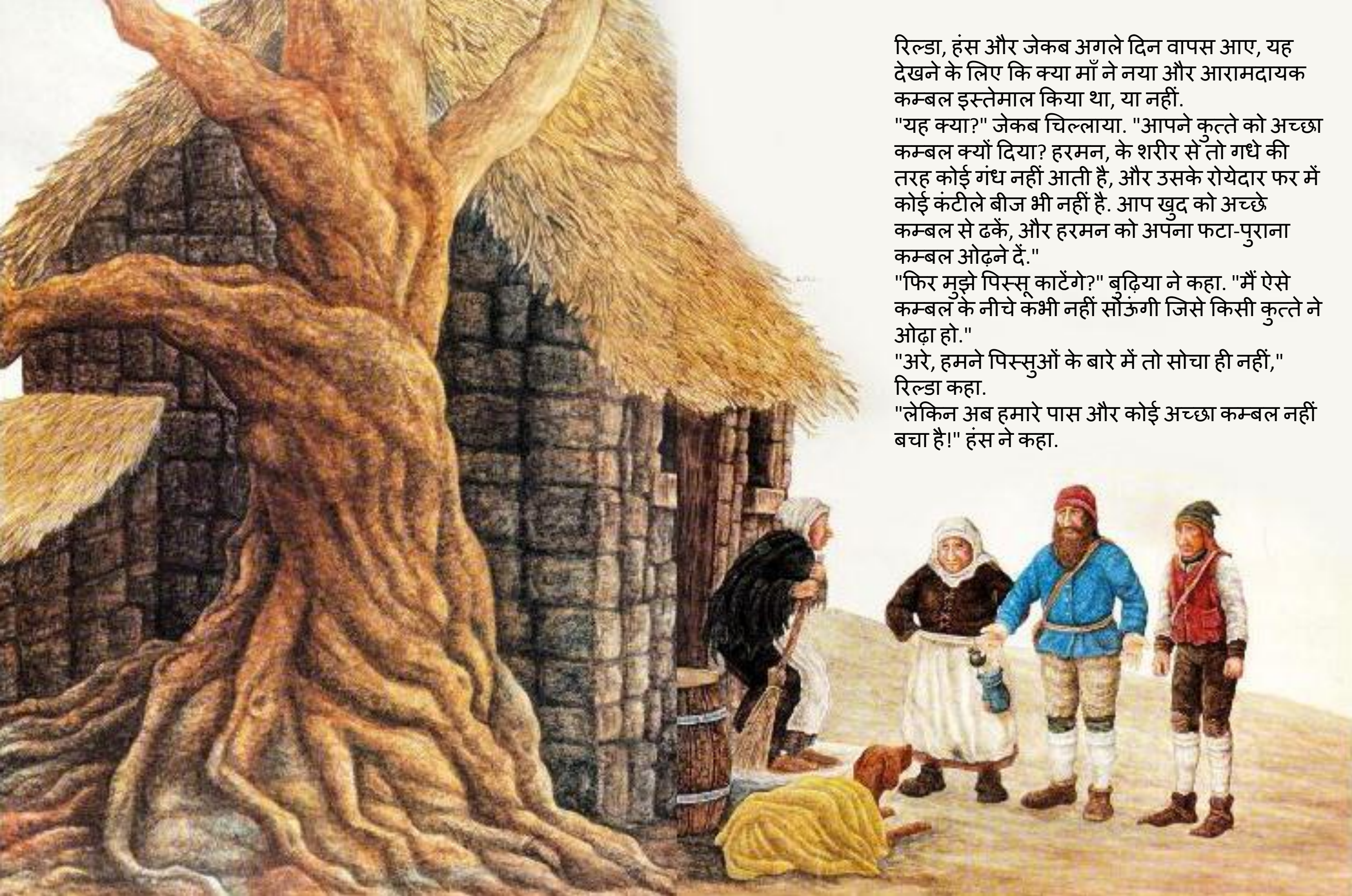




"बेचारा हरमन," बुढ़िया ने कहा. "तुमने मुझे इतने सालों से सुरक्षित रखा है. तुम्हारे तन पर कोई कपड़ा नहीं है और तुम्हारे पैर बर्फ से अभी भी ठंडे हैं. तुम्हें खुद को गर्म रखने के लिए एक अच्छे कम्बल की ज़रुरत है." और यह कह कर बूढ़ी औरत ने अपने कुत्ते हरमन के ऊपर जेकब का दिया नया कंबल डाल दिया. उसने कुत्ते के थरथराते पैरों की उंगलियों को कम्बल से ढंकने की सावधान बरती. हरमन ने एक कृतज्ञतापूर्ण आह भरी और अपनी मालकिन का हाथ चाटा.



फिर बूढ़ी औरत ने आग जलाई, कुछ दूध गर्म किया और बिस्तर पर सोने की तैयारी की. उसने खुद को अपने फटे पुराने कम्बल से ढका. कुछ ही देर में उसने खुद को गर्म महसूस किया और वो सो गई.



रिल्डा, हंस और जेकब अगले दिन वापस आए, यह देखने के लिए कि क्या माँ ने नया और आरामदायक कम्बल इस्तेमाल किया था, या नहीं.

"यह क्या?" जेकब चिल्लाया. "आपने कुत्ते को अच्छा कम्बल क्यों दिया? हरमन, के शरीर से तो गधे की तरह कोई गंध नहीं आती है, और उसके रोयेदार फर में कोई कंटीले बीज भी नहीं है. आप खुद को अच्छे कम्बल से ढकें, और हरमन को अपना फटा-पुराना कम्बल ओढ़ने दें."

"फिर मुझे पिस्सू काटेंगे?" बुढ़िया ने कहा. "मैं ऐसे कम्बल के नीचे कभी नहीं सोऊंगी जिसे किसी कुत्ते ने ओढ़ा हो."

"अरे, हमने पिस्सुओं के बारे में तो सोचा ही नहीं," रिल्डा कहा.

"लेकिन अब हमारे पास और कोई अच्छा कम्बल नहीं बचा है!" हंस ने कहा.

"कोई बात नहीं," बुढ़िया ने कहा. "आपने जो भी कम्बल मुझे दिए, मैंने उनका बहुत अच्छा इस्तेमाल किया. मेरी बकरी अब गर्मी में आराम से सोती है और अब वो दुगना दूध देती है. मेरे गधे को भी आराम मिलता है इसलिए वो दुगनी लकड़ियां ढोता है. गर्म दूध मेरे शरीर को अंदर से गर्म करता है और लकड़ियों की आग मेरे बाहरी जिस्म को गर्म रखती है, इसलिए मेरा काम फटे-पुराने, छेदों वाले कम्बल से अच्छी तरह चल जाता है."



"लेकिन कुत्ता?" जेकब ने कहा. "आपने जो कम्बल हरमन को दिया है वो आपके पैर गर्म कर सकता था?"
"हाँ, वो कर सकता था," बुढ़िया ने कहा. "पर एक वफादार कुत्ते की सुरक्षा से बढ़िया और गर्म क्या हो सकता है?"



यह सुनकर बूढ़ी औरत के बच्चे बच्चे खुश होकर अपने-अपने घर चले गए. फिर टूटे-फूटे घर में रहने वाली बूढ़ी औरत ने खुद को तीन अच्छे कम्बलों और एक छेदों से भरे कम्बल से गर्म रखा.



समाप्त

